

डॉ. डेविड डिसिल्वा , अपोक्रीफा, व्याख्यान 4, एक नज़दीकी नज़र: 2 एज्दास

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा अपोक्रीफा पर दिए गए अपने व्याख्यान में है। यह सत्र 4 है, एक नज़दीकी नज़र: दूसरा एज्दास।

दूसरे एज्दास के साथ, हम अपोक्रीफा की अंतिम पुस्तक पर आते हैं जो विशेष रूप से इज़राइल की भूमि और भूमि में जीवन पर केंद्रित है।

लेकिन दूसरे एज्दास के साथ, हमें हस्मोनियन काल से रोमन वर्चस्व के काल तक और उस काल में तेजी से आगे बढ़ना होगा। 63 ईसा पूर्व में यहूदी स्वतंत्रता समाप्त हो गई। यह शायद 80 साल का एक छोटा सा दौर था जब इज़राइल अन्यजातियों के जुए के अधीन नहीं था।

लेकिन हस्मोनियन राजवंश के भीतर झगड़े के कारण, वे इसे सही करने की कोशिश करते हैं, यहूदा के अंतिम भाई साइमन के परपोते। इन दोनों पक्षों के बीच झगड़े के कारण, रोम को आमंत्रित किया गया, जो प्राचीन दुनिया में हमेशा एक गलती रही है। रोम को इसमें शामिल होने और मध्यस्थता करने और विवाद को सुलझाने के लिए आमंत्रित किया गया था। परिणाम यह हुआ कि रोम ने वास्तव में, दो दावेदारों में से एक के पक्ष में विवाद को सुलझाया और मध्यस्थता की।

लेकिन उस दावेदार को उच्च पुरोहिती में बहाल कर दिया गया जबकि यहूदिया खुद सीरिया प्रांत के रोमन गवर्नर के अधीन एक तरह का संरक्षित राज्य बन गया। इसलिए, आंतरिक यहूदी शासक रोमन अधिपति, रोमन गवर्नर के प्रति जवाबदेह हो गए। और जैसे-जैसे पहली शताब्दी ईसा पूर्व समाप्त हुई, रोम का शासन और भी अधिक प्रत्यक्ष हो गया।

सबसे पहले रोम के एक एजेंट, रोम के एक वफादार सहयोगी, एंटीपेटर नामक व्यक्ति के माध्यम से। और फिर उसके बेटे, जिसका नाम हर कोई जानता होगा, हेरोद द ग्रेट के माध्यम से। अब, शायद रोमन शासन के एक सदी के बाद, यहूदियों ने फैसला किया कि उनके लिए बहुत हो चुका।

और इसलिए, जब हम लगभग 66 ई. में पहुँचते हैं, पोम्पी द ग्रेट के आक्रमण के 120 साल बाद, हम महान, या मुझे कहना चाहिए, पहले यहूदी विद्रोह पर पहुँचते हैं। और यहूदियों के पास रोमन शासन को व्यापक रूप से अस्वीकार करने के लिए वैचारिक कारण हैं। हमें ईश्वर द्वारा शासित होना चाहिए।

हम पर टोरा का शासन होना चाहिए। हम पर पुजारियों और मंदिर की गतिविधियों का शासन होना चाहिए। आप इसे किसी भी तरह से देखें, हम पर किसी विदेशी शक्ति का शासन नहीं होना चाहिए।

और ईमानदारी से कहें तो, रोमन शासन, खास तौर पर उसके राज्यपालों के माध्यम से, यहूदिया में ज़्यादातर समय खराब तरीके से चलाया जाता था। एक के बाद एक असंवेदनशील राज्यपाल भेजे जाते रहे। और अंत में, अगर जोसेफस की बात पर यकीन किया जाए तो आखिरी कुछ राज्यपाल, प्रांत में पदस्थ रहते हुए, भ्रष्ट तरीकों से जितना हो सके उतना पैसा कमाने की कोशिश में लगे थे।

और इसलिए, रोमन शासन के खिलाफ़ आक्रोश बढ़ता गया, जो अंततः 66 में महान यहूदी विद्रोह में बदल गया। खैर, उनके जोश, उत्साह और प्रतिबद्धता के बावजूद, यहूदिया रोम की सेनाओं के सामने कोई मुकाबला नहीं कर सका। यह शुरू से अंत तक एक नरसंहार था।

नौ या 12 महीनों के भीतर, महान सेनापति वेस्पासियन ने गलील में विद्रोह के हर क्षेत्र को दबा दिया था और यहूदिया में आगे बढ़ गया था, सिवाय कुछ रेगिस्तानी किलों के जिन्हें उसने घेर लिया था और बंद कर दिया था। हम सभी मसादा की कहानी जानते हैं, लेकिन मैकेरस और हेरोडियम जैसे कुछ अन्य किलों को भी जब्त कर लिया गया था। और उसने अपने बेटे को यरूशलेम की घेराबंदी का जिम्मा सौंपा।

उनके बेटे टाइटस ने रोमन लोगों की जान बचाने के लिए, यरूशलेम के भीतर अंदरूनी लड़ाई और भुखमरी की अनुमति दी, ताकि दुश्मन को जितना संभव हो सके उतना कमजोर किया जा सके, फिर आखिरकार अपनी सेना के साथ दीवारों को तोड़ दिया और प्रतिरोध को समाप्त कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप मंदिर का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण विनाश हुआ। अब, जोसेफस ने कहा कि टाइटस का यह इरादा नहीं था। लेकिन बाद में, किसी को यह विश्वास करना होगा कि टाइटस कम से कम इस विचार के लिए तैयार था, क्योंकि वास्तव में, जब तक रोमनों ने मंदिर पर्वत के शीर्ष पर खड़ी इमारत को खत्म नहीं कर दिया, तब तक एक भी पत्थर नहीं बचा था।

इससे यहूदियों के सामने कुछ महत्वपूर्ण धार्मिक समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। और यहीं से द्वितीय एज्रास की शुरुआत होती है। द्वितीय एज्रास का अधिकांश भाग रोमनों की भयानक हार के बाद उत्पन्न धार्मिक समस्याओं से जूझने के लिए लिखा गया है।

लेकिन उससे भी बढ़कर, मंदिर का विनाश, बलि पंथ का उन्मूलन, और ऐसा करने वाले बहुत बुरे राष्ट्र को दंडित करने में ईश्वर की विफलता। इसलिए, जब हम द्वितीय एज्रास खोलते हैं, तो हम पाते हैं कि लेखक मूल रूप से यह स्वीकार कर रहा है कि, हाँ, हमें वह मिला जिसके हम हकदार थे। हमने आपकी वाचा का उल्लंघन किया है।

हमने आपके नियमों का पालन नहीं किया। व्यवस्थाविवरण हमेशा सही होता है। लेकिन क्या बेबीलोन के निवासियों का जीवन इससे बेहतर है? और बेबीलोन से लेखक वास्तव में रोम की ओर इशारा कर रहा है।

यहाँ जो कुछ है वह आधुनिक इतिहास का एक नया रूप है, रोम द्वारा यरूशलेम का विनाश, भाषा और दृश्यों का उपयोग करते हुए, और यहाँ तक कि प्राचीन इतिहास के लोग, बेबीलोन द्वारा यरूशलेम का विनाश। तो, हम पढ़ते हैं, क्या बेबीलोन के निवासियों का जीवन कुछ बेहतर है? क्या इसीलिए बेबीलोन ने सिथ्योन पर प्रभुत्व प्राप्त किया है? क्या बेबीलोन सिथ्योन से बेहतर

करता है? क्या इस्राएल के अलावा कोई अन्य राष्ट्र आपको जानता है? याकूब के गोत्रों की तरह कौन से गोत्रों ने आपकी वाचाओं पर विश्वास किया है? मैंने राष्ट्रों के बीच व्यापक रूप से यात्रा की है और उन्हें आपकी आज्ञाओं पर विचार किए बिना बहुतायत का आनंद लेते देखा है। पृथ्वी पर रहने वालों ने आपकी दृष्टि में कब पाप नहीं किया है? या किस अन्य राष्ट्र ने आपकी आज्ञाओं का पालन किया है जैसा कि हमारे लोगों ने किया है? तो, एक तरफ, हाँ, हमने पाप किया, हमें वह मिला जिसके हम हकदार थे।

लेकिन रोमनों ने इससे भी ज़्यादा पाप किए हैं। उन्हें कब उनकी सज़ा मिलेगी? अगर ईश्वर, आपके आदेश में न्याय है, तो आप हमें कैसे सज़ा दे सकते हैं, जो कम से कम, आप जानते हैं, समय-समय पर आपकी वाचा की परवाह करते हैं और उन लोगों को सज़ा देने में विफल रहते हैं जिन्होंने कभी भी आपके या आपकी वाचा के बारे में दूसरा विचार नहीं किया? अब, 2 एजड्रास के साथ आगे बढ़ने से पहले, हमें कुछ साहित्यिक मुद्दों के बारे में सोचने की ज़रूरत है। 2 एजड्रास वास्तव में एक में तीन पाठ है, जैसा कि हमारे पास वर्तमान में है।

2nd एज्रास, 2nd एज्रास 3-14 का मूल भाग, 100 ई. के आसपास लिखा गया यहूदी सर्वनाश है। और यह महत्वपूर्ण है क्योंकि दशकों बीत चुके हैं, और रोम केवल फलता-फूलता रहा है, अपने शासन का विस्तार करता रहा है, और बेहतर से बेहतर होता गया है। वैसे, इस पाठ को, 2nd एज्रास के इस हिस्से को अक्सर विद्वानों के साहित्य और यहाँ तक कि कुछ प्राचीन साहित्य में 4th एज्रा के रूप में संदर्भित किया जाता है।

अब, एपोक्रीफा में 2nd एज्रास के पहले दो अध्याय एक ईसाई प्रस्तावना हैं जिन्हें 2nd शताब्दी ई. के दौरान किसी समय जोड़ा गया था। इन पहले दो अध्यायों को अक्सर 5th एज्रा के रूप में संदर्भित किया जाता है। हम जानते हैं कि वे एक ईसाई जोड़ हैं क्योंकि उस पाठ में मैथ्यू और रहस्योद्घाटन दोनों की स्पष्ट प्रतिध्वनियाँ हैं।

यह तो बताने की ज़रूरत नहीं है कि पहले दो अध्यायों का संदेश मूल रूप से ईश्वर के लोगों को ऐतिहासिक इज़राइल से मसीह में अन्यजातियों और यहूदियों के नए समुदाय में स्थानांतरित करने से संबंधित है। तो यह एक और स्पष्ट संकेत है कि पहले दो अध्याय ईसाई पाठ हैं। और फिर 2nd एजड्रास के अंतिम दो अध्याय, 15 और 16, इस पूरे बढ़ते हुए द्रव्यमान में जोड़े गए ईसाई निष्कर्ष प्रतीत होते हैं, जो तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान जोड़े गए थे, विशेष रूप से उत्पीड़न और अन्य मुद्दों का जवाब देते हुए जो ईसाई तीसरी शताब्दी के एशिया माइनर में सामना कर रहे हैं।

हम दूसरे एज्रास की मूल परत पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं, जो इसके मूल में यहूदी सर्वनाश है, जिसका उद्देश्य यहूदी विश्वदृष्टि और वाचा में विश्वास को मजबूत करना है, उन अनुभवों के सामने जो वाचा को पूरी तरह से कमजोर करने की धमकी देते हैं। और लेखक उत्तरों की तलाश करता है या सर्वनाश के ढांचे में उत्तर प्रस्तुत करता है। अब, हम नए नियम, प्रकाशितवाक्य में एक सर्वनाश के बारे में जानते हैं।

हम पुराने नियम में सर्वनाश के कुछ अंशों के बारे में जानते हैं, उदाहरण के लिए, दानियेल का दूसरा भाग। लेकिन अगर हम अपने पढ़ने को शास्त्र तक ही सीमित रखें, तो हमें वास्तव में बहुत सारे सर्वनाशों का सामना नहीं करना पड़ेगा। लेकिन यहूदियों ने कम से कम एक दर्जन सर्वनाशों के बारे में लिखा है जो लगभग 250 ईसा पूर्व से लेकर 100 ईस्वी के बीच की अवधि से बचे हुए हैं।

और ये सभी सर्वनाश एक ही रणनीति का अनुसरण करते दिखते हैं। वे फिर से बड़ी तस्वीर प्राप्त करना चाहते हैं, जो तत्काल तस्वीर के टुकड़ों को वापस अपनी जगह पर रखता है। इसलिए, यहाँ भ्रम है; प्रश्न है, तनाव है, और हमारे सामने अभी और यहीं पर अनसुलझे चुनौतियां हैं।

हम अपने सामने मौजूद गड़बड़ी के बारे में जिस दृष्टिकोण की ज़रूरत है, उसे कैसे प्राप्त करें ताकि हम अपने सामने मौजूद गड़बड़ी के लिए एक विश्वसनीय प्रतिक्रिया पा सकें? खैर, वहाँ पहुँचने का तरीका है उस बड़ी तस्वीर पर वापस जाना जो हमारे सामने मौजूद चीज़ों को परिप्रेक्ष्य में रखती है। चौथा एज्रा कई तरीकों से ऐसा करता है। एक तरीका जो मैंने सूचीबद्ध नहीं किया है, लेकिन वह महत्वपूर्ण है, वह यह है कि यह उस समय को देखता है जब यहूदी लोगों को पहले इस तरह की गड़बड़ी से निपटना पड़ा था।

यह पहली बार नहीं है जब हमने अपने मंदिर को नष्ट होते देखा है और विध्वंसक को दशकों तक फलते-फूलते देखा है। लेकिन अगर हमें थोड़ा परिप्रेक्ष्य मिले, तो हम कह सकते हैं कि हम अब कहाँ हैं? और बेबीलोन अब कहाँ है? इज़राइल की कहानी जारी रही, लेकिन बेबीलोन एक निश्चित बिंदु से आगे नहीं बढ़ पाया। तो, यह रोम द्वारा यरूशलेम और उसके मंदिर के विनाश से उठे सवालियों को परिप्रेक्ष्य में रखना शुरू करता है।

लेकिन फिर लेखक, चौथा एज्रा, हमें मृत्यु के बाद के पुरस्कार और दंड के दृश्य भी देता है। इसलिए, केवल यही जीवन उत्तर पाने का स्थान नहीं है। वह हमें रोम के भविष्य के न्याय के दृश्य भी देता है।

परमेश्वर इस राक्षसी को जवाबदेह ठहराएगा, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने ऐतिहासिक रूप से बेबीलोन को और हर दूसरे उत्पीड़क को परमेश्वर के लोगों के साथ किए गए उनके व्यवहार के लिए जिम्मेदार ठहराया है। वह हमें यरूशलेम और परमेश्वर के मसीहा के अधीन इस्राएल के लोगों की भविष्य की बहाली के दृश्य भी दिखाता है। इसलिए, इस बड़ी तस्वीर के प्रकाश में, अगर हम इसे देख सकते हैं, और चौथे एज्रा के लेखक अपने पाठकों को इसे देखने में मदद करते हैं, तो इस बड़ी तस्वीर के प्रकाश में, परमेश्वर का न्याय, परमेश्वर के वादे और परमेश्वर की वाचा सभी की अभी भी पुष्टि की जा सकती है।

टोरा के अनुसार जीना अभी भी समझदारी है। इसलिए जब हम चौथे एज्रा के कुछ हिस्सों की ओर मुड़ते हैं, और इसलिए हम पढ़ते हैं, जैसा कि एज्रा, काल्पनिक एज्रा, प्रार्थना में भगवान को संबोधित करता है, आपने आदम को एक आदेश दिया, और उसने इसका उल्लंघन किया। और इसलिए, आपने तुरंत उसके और उसके वंशजों के लिए मृत्यु नियुक्त की।

आपकी महिमा आग, भूकंप, हवा और बर्फ के चार द्वारों से होकर गुज़री ताकि आप याकूब के वंशजों को कानून दे सकें, इस्राएल के वंशजों को पालन किए जाने वाले नियम। लेकिन आपने

उनसे बुराई करने की प्रवृत्ति को दूर नहीं किया ताकि आपका कानून उनमें फल दे सके। पहले आदम ने इस प्रवृत्ति के बोझ तले दबकर आपकी अवज्ञा की और पराजित हुआ।

लेकिन उसके वंशजों में से सभी ऐसे ही थे। बीमारी स्थायी हो गई। व्यवस्था लोगों के दिलों में थी, साथ ही दुष्टता की जड़ भी।

और जो अच्छा था वह चला गया, और दुष्टता बनी रही। इसलिए, जब लेखक इस बात पर विचार करता है कि उसके लोग पहली बार इस स्थिति में कैसे आए, वे कैसे इस स्थिति में आए कि परमेश्वर इस विदेशी राष्ट्र के माध्यम से शहर और उसके मंदिर को नष्ट कर देगा, तो वह मानता है कि, एक तरह से, यह वास्तव में परमेश्वर की गलती है। एक ओर, परमेश्वर ने हमें कानून दिया, जो महान है।

आज्ञाकारिता के लिए कानून में आशीर्वाद हैं, जो महान हैं। अवज्ञा के लिए इसमें शाप हैं, जो इतने महान नहीं हैं, लेकिन यह सब समझ में आता है। लेकिन इन सबका क्या फायदा है अगर हमारे दिलों में अभी भी पाप करने की प्रवृत्ति है? और इसलिए, यह लेखक आदम की कहानी को मूल कारण के रूप में देखता है।

आदम ने एक आज्ञा के विरुद्ध पाप किया, और जो उसे पीड़ित करता था, वह स्थायी बीमारी बन गई, और वह इस भाषा का उपयोग भी करता है, जो मानव जाति को पीड़ित करती है। हम बुराई की ओर झुकाव से आगे नहीं बढ़ सकते हैं, जो हमारे अच्छे करने के इरादों पर हावी हो जाती है। अगर यह रोमियों 7 में पॉल की तरह लगता है, तो ऐसा होना चाहिए।

पहली सदी में कानून का पालन करने की कठिनाइयों पर एक नए दृष्टिकोण का विकास हुआ, और यह बुराई की उत्पत्ति पर एक नए दृष्टिकोण को भी दर्शाता है। यह एक अलग बात है, लेकिन यह मुफ्त है। एज्रा, पॉल की तरह, सभी परेशानियों के स्रोत के लिए आदम को देखता है।

एडम और 4थ एज्रा के लेखक शायद ऐसा करने वाले पहले लोग हैं। इस समय से पहले, यहूदी लेखकों ने दुनिया में बुराई की उत्पत्ति को समझाने के लिए उत्पत्ति 6:1-4 में वॉचर्स की कहानी को देखा। एडम और ईव, ठीक है, हम सभी उस कहानी को जानते हैं, यह वहाँ है, लेकिन असली समस्या तब हुई जब स्वर्ग में स्वर्गदूतों ने फैसला किया कि पृथ्वी पर मनुष्यों की बेटियाँ वास्तव में अच्छी दिखती हैं।

और इसलिए, स्वर्गदूतों ने मनुष्यों के लिए विदेशी और खतरनाक ज्ञान लाया। उन्होंने हमें धातु के खनन की कला सिखाई ताकि हम सोने की चाहत में लालच सीख सकें ताकि हम बेहतर हथियार बना सकें और तलवारें बनाकर बेहतर हिंसा सीख सकें। वे सौंदर्य प्रसाधन की कला लेकर आए ताकि महिलाएँ पुरुषों की वासना को और अधिक भड़का सकें।

वे सभी तरह की निषिद्ध कलाएँ लेकर आए। और उनके बच्चों, संतानों, दिग्गजों ने मानवता पर हर तरह का कहर बरपाया। और जब वे अंततः मर गए या भगवान के न्याय द्वारा मारे गए, तो उनकी आत्माएँ दुष्ट राक्षस बन गईं जो मानव जाति को पीड़ित करना जारी रखती हैं।

यह वह प्राथमिक स्थान है जहाँ यहूदी यह समझाने के लिए जाते हैं कि पहली शताब्दी से पहले दुनिया में क्या गलत था, जब आदम, या आदम और हव्वा, जब उनकी कहानी और अधिक सामने आती है, जैसा कि इस पाठ में है। अब, एज़्रा को स्वर्गदूत से जो उत्तर मिलता है वह बहुत संतोषजनक नहीं है। लेकिन स्वर्गदूत मूल रूप से जो कहता है, वह यह है कि, यह मुश्किल है लेकिन निश्चित रूप से संभव है।

व्यवस्थाविवरण को देखते हुए, यह संभव है। और, वास्तव में, कानून आपकी शिकायत से कहीं ज़्यादा मायने रखता है। इसलिए, रुकें और बस उस प्रतियोगिता से लड़ें जो परमेश्वर ने आपके सामने रखी है।

और इसलिए, हम 2 एज़्रा 7 में पढ़ते हैं, ये नियम हैं, टोरा का पालन करने की मांग का जिक्र करते हुए, जो कि वह तरीका है जिससे कोई अपने निर्माता का सम्मान करता है। ये उस प्रतियोगिता के नियम हैं जिसमें पृथ्वी पर जन्म लेने वाला हर व्यक्ति भाग लेता है। जो लोग हार जाते हैं, उन्हें वही भुगतना पड़ेगा जो आपने कहा, यानी खो जाना और अनंत काल तक दंड भुगतना।

लेकिन जो जीतेंगे उन्हें वही मिलेगा जो मैंने कहा, यानी आने वाले युग में स्वागत जिसे परमेश्वर ने धर्मी लोगों के लिए तैयार किया है। यही वह मार्ग है जिसे मूसा ने जीवित रहते हुए घोषित किया था: लोगों से बात करो और अपने लिए जीवन चुनो ताकि तुम जी सको। यहाँ, विशेष रूप से व्यवस्थाविवरण 30:19 का हवाला दिया गया है। तो, स्वर्गदूत, उरीएल, जो एज़्रा का वार्तालाप साथी है, उत्तर देता है कि, हाँ, प्रतियोगिता कठिन है, लेकिन यह संभव है।

और जीत का इनाम बहुत बड़ा है। और आखिरकार, तर्क यह है कि, आप जानते हैं, भगवान का सम्मान किसी भी चीज़ से ज़्यादा मायने रखता है। इसलिए, हम उल्लंघन पर आँख नहीं मूँदेंगे।

और यह बेहतर है कि बहुत से लोग नाश हो जाएँ बजाय इसके कि परमेश्वर का सम्मान धूमिल हो क्योंकि कानून का तिरस्कार किया जाता है। इसलिए, आगे बढ़ते रहें, दुष्ट प्रवृत्ति के खिलाफ लड़ते रहें क्योंकि इसे जीतना आपके अंदर है। यह मुश्किल है, लेकिन आप इसे कर सकते हैं।

और इनाम बहुत बड़ा है। एक और मुद्दा जो एज़्रा, काल्पनिक चरित्र जो हमें इस पुस्तक में ले जाता है, जिसे एज़्रा उठाता है, वह चुनाव के सिद्धांत, ईश्वर द्वारा इस्राएल के चुनाव से संबंधित है। वह इस पुस्तक में कई मौकों पर यह सवाल उठाता है कि जब हम बार-बार दूसरे राष्ट्रों द्वारा कुचले जाते हैं तो चुनाव का क्या मतलब है? इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय तीन में, वह सवाल पूछेगा कि हमारे राष्ट्रीय भाग्य और वाचा के वादों को प्राप्त करने के लिए वाचा के दायित्वों की कठोरता को पूरा करने की कठिनाई को देखते हुए चुनाव कैसे सार्थक है? अध्याय पाँच में, वह सवाल को अलग तरीके से उठाएगा।

यदि परमेश्वर ने वास्तव में इस्राएल को अन्य सभी राष्ट्रों में से चुना है, तो वे अन्य राष्ट्र इस्राएल पर प्रभुत्व क्यों बनाए रखते हैं? अंत में, अध्याय छह में, अपनी तीसरी शिकायत में, वह सवाल उठाता है, सृष्टि के दिनों की एक लंबी तरह की याद के बाद, वह अपने बिंदु पर आता है: यदि परमेश्वर ने इस दुनिया को इस्राएल के लिए बनाया है, तो इस्राएल इसके फलों का आनंद क्यों नहीं लेता है?

जबकि वे राष्ट्र जो परमेश्वर की दृष्टि में थूकने के लायक नहीं हैं, वे स्वयं इस्राएल को खा जाते हैं? स्वर्गदूत द्वारा दिया गया उत्तर परमेश्वर के न्याय और टोरा के प्रति आज्ञाकारिता की आवश्यक भूमिका के प्रश्न पर वापस आता है। संक्षेप में, चुनाव टोरा के पालन जितना महत्वपूर्ण नहीं है। परमेश्वर के आशीर्वाद के लिए कोई मुफ्त सवारी नहीं है।

इस्राएल में केवल वे लोग जो टोरा का पालन करते हैं और परमेश्वर के कानून का सम्मान करके परमेश्वर का आदर करते हैं, वे ही वाचा की आशीषों का आनंद लेंगे। और इसलिए, हम चौथे अध्याय में पढ़ते हैं, जो पहली शिकायत के लिए स्वर्गदूत के उत्तर का हिस्सा है, कि चुनाव, न्याय और इन सभी सवालों के जवाब आने वाले युग के लिए स्थगित कर दिए गए हैं। दुनिया वास्तव में अपने अंत की ओर बढ़ रही है।

वास्तव में, यह उन चीजों को नहीं ला सकता है जिनका वादा इस युग के दौरान धर्मी लोगों से किया गया है क्योंकि यह दुनिया दुख और बीमारी से भरी हुई है। जिस बुराई के बारे में आपने मुझसे पूछा था, वह वास्तव में बोई जा चुकी है, और उसकी पूरी फसल अभी तक नहीं आई है। यदि जो बोया गया था, वह काटा नहीं गया है, और वह स्थान जहाँ बुराई बोई गई है, वह नहीं हटा है, तो वह खेत जहाँ अच्छाई बोई गई है, नहीं आएगा।

इसमें हम सर्वनाशकारी निराशावाद का एक क्लासिक कथन पाते हैं। इस दुनिया को छोड़ देना, इस युग को छोड़ देना। मूल रूप से, यह कहना कि यह युग पाप और उसके परिणामों से बर्बाद हो गया है, और इसे बस अपना रास्ता तय करना होगा।

वह स्थान जहाँ धार्मिकता और उसके परिणामों का निवास होगा, वह युग है जो अभी आने वाला है। वह युग जिसका तब तक कोई स्थान नहीं होगा जब तक कि यह युग अपना समय पूरा न कर ले और बह न जाए। स्वर्गदूत बाद की शिकायत के संबंध में यह भी उत्तर देता है कि चुनाव सभी जातीय यहूदियों से संबंधित नहीं है, बल्कि केवल उन यहूदियों से संबंधित है जिन्होंने ईश्वर के पास एक खजाने के रूप में विश्वास जमा किया है।

वे यहूदी जिन्होंने अपने भीतर बनी दुष्ट प्रवृत्ति पर काबू पाने के लिए कठोर संघर्ष किया है ताकि यह उन्हें जीवन से मृत्यु की ओर न ले जाए। फिर से, व्यवस्थाविवरण 30 की भाषा को याद करते हुए। स्वर्गदूत वादा करता है कि वाचा की आशीषें वास्तव में इस इस्राएल, इस्राएल के इस सीमित हिस्से का, मृत्यु के बाद, बल्कि इस दुनिया के इतिहास में परमेश्वर के निर्णायक हस्तक्षेप के बाद भी इंतज़ार करती हैं।

इस कारण से, स्वर्गदूत कहता है, परमप्रधान ने एक नहीं बल्कि दो दुनियाएँ बनाई हैं। और यह केवल दूसरे में ही है कि वाचा की आशीषें इस्राएल के भीतर धर्मी भाग को मिलेंगी। 4 एज्रा के लगभग आधे भाग में, हम एक तरह के सर्वनाशकारी संवाद, एक दूरदर्शी और एक स्वर्गदूत के बीच संवाद से दूसरे तरह के सर्वनाशकारी माध्यम, अर्थात् दर्शनों की एक श्रृंखला में बदलाव करते हैं।

इसमें अभी भी दर्शनों को समझाने के लिए स्वर्गदूत से बातचीत शामिल है, लेकिन अब यह काफी अलग है। यह सिर्फ बातचीत नहीं है; यह दर्शन और व्याख्या है। इनमें से पहला दर्शन यरूशलेम के परिवर्तन से जुड़ा है।

और इसे अक्सर एज्रा की कहानी में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है, जो वास्तविकता से रूबरू होता है। एज्रा एक खेत में जाता है, और उसकी मुलाकात एक महिला से होती है जो अपने बेटे की मौत का शोक मना रही है। एज्रा उसे सलाह देता है कि वह अपने व्यक्तिगत दुःख के बारे में चिंता करना बंद करे और अपने आस-पास पूरे यरूशलेम के दुःख को देखे।

और किसी तरह से उसके व्यक्तिगत दुःख में इस तथ्य से सांत्वना मिलती है कि पूरा शहर, पूरा देश, दुःख में शामिल है और शोक में है। और फिर वह अपनी आँखों के सामने इस महिला को एक महान और गौरवशाली शहर में बदलते देखता है। और वह इससे हैरान और स्तब्ध है।

और स्वर्गदूत प्रकट होकर कहता है, देखो, यह सिंघोन है। वह अब अपने बच्चों के लिए विलाप कर रही है। वह अब अपनी वीरानी के कारण विलाप कर रही है।

लेकिन परमेश्वर के भविष्य में वह उस महिमा को प्राप्त करने के लिए रूपांतरित हो जाएगी जिसका उसने पहले कभी आनंद नहीं लिया था। और यह एज्रा को एक नई आशा, एक नई उम्मीद देना शुरू करता है। और जब वह अध्याय 11 और 12 में पाए जाने वाले दर्शनों की अगली श्रृंखला में आगे बढ़ता है, तो वह उन दर्शनों में आगे बढ़ता है जो परमेश्वर द्वारा सिंघोन के उत्पीड़क का न्याय करने के प्रश्न से निपटते हैं।

परमेश्वर अंततः रोम का न्याय कर रहा है। और इसलिए, उन अध्यायों में, हमें एक बड़े उकाब का दर्शन मिलता है। और यह एक चीज़ है।

सर्वनाश वास्तव में जो कह रहे हैं उसे छिपाने की कोशिश नहीं करते, है न? हर कोई जानता है कि चील रोम का प्रतीक है क्योंकि रोम सेना के हर मानक के शीर्ष पर हर जगह चील को चिपकाता है।

खैर, हर सेना के झंडे के ऊपर। या रोम शहर की नक्काशी में। या, उसके सिक्कों के पीछे, आप दुनिया के शीर्ष पर खड़े एक बाज को देखते हैं।

तो, एज्रा के पास एक उकाब का अपना दृष्टिकोण है। 12 सिर और तीन पंख, 12 पंख और तीन सिर वाला उकाब। प्रत्येक पंख अपनी बारी में एक सम्राट का प्रतिनिधित्व करता है।

और फिर, एक निश्चित बिंदु पर, बारी-बारी से तीन सम्राटों का क्लोज-अप, बारी-बारी से उनके सिर। और यहाँ जो हमारे पास है, वह मूल रूप से जूलियस सीज़र से डोमिनियन तक रोम की कहानी है। और आशा है कि अंत में, डोमिनियन के बाद और उसके बाद कुछ तुच्छ ढोंगियों के बाद, भगवान हस्तक्षेप करेंगे।

भगवान एक संदेशवाहक भेजेंगे। उनके मसीहा रोम को दोषी ठहराने के लिए, चील को उसके सभी अपराधों के लिए दोषी ठहराने के लिए। और इसलिए हम 2nd एजड्रास 11 में पढ़ते हैं, मसीहा आता है और रोम से कहता है, तुमने दुनिया पर बहुत आतंक के साथ और पूरी दुनिया पर कठोर अत्याचार के साथ शासन किया है।

तुम इतने लंबे समय तक दुनिया में छल-कपट के साथ रहे हो। तुमने धरती का न्याय किया, लेकिन सच्चाई से नहीं। क्योंकि तुमने मनुजों पर अत्याचार किया और उन लोगों को चोट पहुंचाई जो अशांति नहीं फैलाते।

तूने सच बोलने वालों से नफरत की और झूठ बोलने वालों से प्यार किया। तूने उन लोगों के घरों को नष्ट कर दिया जो फल देते थे और उन लोगों की दीवारें गिरा दीं जिन्होंने तुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया था। तेरा अहंकार सर्वोच्च तक पहुंच गया है और तेरा घमंड शक्तिशाली तक पहुंच गया है।

इसलिए, चील, तुम्हें पूरी तरह से गायब हो जाना चाहिए। तब पूरी धरती तरोताजा और बहाल हो जाएगी, तुम्हारी हिंसा से मुक्त हो जाएगी, और हम उसके न्याय और दया की आशा करेंगे जिसने इसे बनाया है। तो यहाँ शेर के इस दर्शन में, मुझे उल्लेख करना चाहिए था, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण मसीहाई आकृति है, शेर का यह दर्शन चील को इंगित करता है, चील पर न्याय की घोषणा करता है, और चील के पूरे शरीर, और उसके पंखों, और उसके सभी दयनीय अंगों के आसन्न विनाश, एज्रा की पहली शिकायत का उत्तर देता है।

हे प्रभु, तू कब तक उन लोगों का न्याय नहीं करेगा जिन्होंने तेरे नगर को रौंदा है, चाहे वह कितना भी न्यायपूर्ण क्यों न हो? परमेश्वर के अच्छे भविष्य में, ऐसा अवश्य होगा। अब, एज्रा में जो बात हमें कुछ हद तक परेशान करने वाली लगती है, वह यह है कि अन्यजातियों का परमेश्वर के अच्छे भविष्य में कोई हिस्सा नहीं है। एज्रा ने कभी भी यह संकेत नहीं दिया कि कोई अन्यजाति व्यवस्था का पालन करेगा और परमेश्वर के लोगों का हिस्सा बनेगा।

चुने हुए लोगों के बारे में उनका दृष्टिकोण बहुत ही न्यूनतावादी है। इसमें कोई भी गैर-यहूदी शामिल नहीं है, और इसमें अधिकांश इस्राएल शामिल नहीं है। इसमें केवल इस्राएल के वे लोग शामिल हैं जो दुष्ट प्रवृत्ति के विरुद्ध संघर्ष करते हैं और व्यवस्था का पालन करते हैं, और इस प्रकार सृष्टिकर्ता का सम्मान करते हैं, न केवल इस युग के बल्कि अगले युग के भी, जो इस युग में उसका सम्मान करने वालों को आने वाले युग में जीवन और अच्छी चीजों से पुरस्कृत करेगा।

जहाँ तक गैर-यहूदियों की बात है, लेखक के पास उनके बारे में कहने के लिए केवल एक ही बात है जो 2 एज्रा 6 और उसके बाद के अध्यायों में दिखाई देती है। आपने कहा है कि आदम से पैदा हुए अन्य राष्ट्र कुछ भी नहीं हैं, कि वे थूक के समान हैं, और आपने उनकी बहुतायत की तुलना घड़े से निकली एक बूँद से की है। लेकिन अब देखिए, प्रभु।

ये राष्ट्र जो महत्वहीन हैं, हम पर शासन करते हैं और हमें खा जाते हैं, जबकि हम, आपके लोग, जिन्हें आपने अपना सबसे बड़ा पुत्र, अपना एकमात्र पुत्र, जो आपके लिए उत्साही हैं, आपके

सबसे प्यारे लोग कहा है, उन्हें सौंप दिए जाते हैं। यदि दुनिया हमारे लिए बनाई गई थी, तो हम अपनी दुनिया को विरासत के रूप में क्यों नहीं रखते? यह स्थिति कब तक रहेगी? पॉल के ज्वलंत प्रश्न को सुने बिना इस तरह के ग्रंथों को पढ़ना मुश्किल है। क्या ईश्वर केवल यहूदियों का ईश्वर है? क्या ईश्वर अन्यजातियों का भी ईश्वर नहीं है? यह एक ऐसा बिंदु है जिस पर प्रारंभिक ईसाई आंदोलन अपने परिवेश के खिलाफ मजबूती से खड़ा होगा और एक ऐसा बिंदु जो प्रारंभिक चर्च के खिलाफ मूल धर्म के सदस्यों और यहूदी लोगों के सदस्यों से भारी आलोचना को आकर्षित करेगा।

4 एज्रा में अंतिम शब्द टोरा को जीवन के मार्ग के रूप में पुष्टि करता है। जब तक हम 2 एज्रा 14 तक पहुँचते हैं, जो वास्तव में 4 एज्रा का अंतिम अध्याय है, एज्रा की सभी शिकायतों, प्रश्नों और चुनौतियों का उत्तर दिया जा चुका है। इस्राएल के भीतर अवज्ञाकारी लोगों पर इस्राएल के लिए न्याय है, लेकिन इस्राएल के भीतर धर्मी लोगों के लिए भी।

उन राष्ट्रों के लिए न्याय है जिन्हें परमेश्वर ने पहले ही अपने हाथ में ले लिया है और पहले से ही देख लिया है कि वह कैसे अभियोग लगाएगा और उनके शासन को समाप्त करेगा और अपने बिखरे हुए उत्पीड़ित लोगों को अपने मसीहा के तत्वावधान में इकट्ठा करेगा। इन सभी सवालों के जवाब मिल चुके हैं। इसलिए, अंतिम अध्याय में, हमारे पास शास्त्रों का पुनर्गठन है।

एज्रा अपने साथ पाँच शास्त्रियों को इकट्ठा करता है क्योंकि कहानी में शास्त्र खो गए हैं, साथ ही यरूशलेम और मंदिर को जला दिया गया है और जो कुछ हुआ है। एज्रा अपने आस-पास पाँच शास्त्रियों को इकट्ठा करता है, और एक देवदूत एज्रा को पीने के लिए एक ज्वलनशील तरल देता है। इसलिए वह प्याला पीता है और ज्ञान उगलना शुरू कर देता है।

वह जो कुछ भी कहता है वह धर्मग्रंथों का पाठ और 70 अतिरिक्त पुस्तकों का पाठ है, जिसे ये शास्त्री दिन-रात लिखकर पाठ को लिखने में लगे रहते हैं। लेखक ने एक रोचक विवरण में बताया है कि वे इन पुस्तकों को एक नई लिपि में लिखते हैं जिसे वे नहीं जानते थे, वह वर्गाकार लिपि जिसे हम हिब्रू के नाम से जानते हैं। खैर, हम अपनी हिब्रू बाइबलें पढ़ते हैं और क्या-क्या।

और इसलिए, उन्होंने सभी लोगों के लिए 24 पुस्तकें और लोगों के बीच बुद्धिमान लोगों के लिए छिपाने और रखने के लिए 70 पुस्तकें बनाईं। कैनन के पुनर्गठन के साथ, कहानी में उल्लेखनीय 24 पुस्तकें और अतिरिक्त पाठ समान रूप से प्रेरित हैं, बस समान रूप से साझा नहीं किए जाने चाहिए। इसके साथ ही, हमारे पास एज्रा के अपने होठों में लोगों को टोरा रखने के लिए नया आदेश है।

उसकी सारी शिकायतें दूर हो गई हैं। वाचा के बारे में उसके सारे सवाल दूर हो गए हैं। और वह 2 एज्रा के 14 में कहता है, हमारे पूर्वजों को जीवन की व्यवस्था मिली थी, लेकिन उन्होंने उसका पालन नहीं किया।

और उनके पीछे तुम भी पाप करते रहे। तुम्हें सिय्योन के क्षेत्र में भूमि का बंटवारा करके दिया गया था। तुम और तुम्हारे पूर्वजों ने बुरे काम किए और परमप्रधान की आज्ञाओं का पालन नहीं किया।

चूँकि वह एक न्यायी न्यायी है, इसलिए समय के साथ उसने तुमसे वह सब छीन लिया जो उसने तुम्हें दिया था। अब, तुम निर्वासन में हो, और तुम्हारे रिश्तेदार और भी दूर रहते हैं। यदि तुम अपने मन पर नियंत्रण रखोगे और अपने हृदय को निर्देश दोगे, तो तुम जीवित रहोगे।

और मृत्यु के बाद, आपको दया मिलेगी। तो, संदेह करने वाला एज्रा, प्रश्न करने वाला एज्रा, एक बार फिर इतिहास और उसके वादों के व्यवस्थाविवरणवादी दृष्टिकोण का प्रवर्तक एज्रा बन गया है। उसने अपने पाठकों को उसी यात्रा पर ले जाकर उन सभी सवालों से जूझने के लिए प्रेरित किया है जो पहले यहूदी विद्रोह की हार और मंदिर के विनाश के बाद यहूदी धर्म के सामने आए थे और उन्हें उसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए तैयार किया है जिस दिशा में रब्बी यहूदी धर्म उन्हें ले जाएगा।

टोरा के पालन पर एक संपूर्ण, लगभग एकमात्र ध्यान, टोरा का अभ्यास वर्तमान और आने वाले युग में जीवन के मार्ग के रूप में।

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा अपोक्रीफा पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 4 है, एक नज़दीकी नज़र: दूसरा एजड़ास।